

## अकाल से खालसा तक

प्रो. कपिल कपूर

आप सभी का धन्यवाद बुजुर्ग व्यक्ति को सुनने के लिए। आप जानते हैं भारतीय संस्कृति एवं चीन की संस्कृति में एक सामान्य विशेषता है कि बुजुर्गों का बहुत महत्व होता है। सभी जगह नहीं होता। लेकिन इन दो संस्कृतियों में बहुत होता है। वास्तव में शब्द प्रमाण जिसे हम कहते हैं; वह ज्ञान-मीमांसा है। इसका अर्थ है 'ज्ञान'। जब हम ज्ञान के चारे में बात करते हैं तो, उसके प्रमुख आयाम हमारे सामने आते हैं। सबसे पहले हम जानना क्या चाहते हैं अर्थात् ज्ञान की वस्तु: दूसरा हमें यह कैसे पता चलेगा कि हम क्या जानना चाहते हैं। तीसरा जानने वाला कौन है। चौथा क्या जाना जाता है। पाँचवा क्या जो हम जानते हैं वह सत्य है-यह पाँच प्रश्न होते हैं। इन प्रश्नों पर हमारी और पश्चिम की सभ्यता में मुख्य रूप से गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है। यह हमारे विचार के इतिहास को समझ को प्रस्तुत करता है। सिख परंपरा का आरंभ गुरुनानक देव जी से होता है और पूर्णता गुरु गोबिंद जी से। इनको हम किसी भी बड़ी नदी के दो मजबूत स्तंभ के रूप में देख सकते हैं। इन्होंने जो विचारों का पुल, जो समर्पण का पुल, और जो सामाजिक प्रतिबद्धता का पुल निर्मित किया, वह वास्तव में बहुत विशाल है। धर्म क्या है? आजकल धर्म का प्रयोग रिलीजन से होता है। धर्म का अर्थ रिलीजन नहीं है। धर्म रिलीजन में अंतर है। हम अपनी चर्चा में इन विषयों पर बिंदुवार बात करेंगे।

भारत भाग्यशाली रहा है कि यह अनेक महान विचारकों की कर्मस्थली रहा है। इन महान विचारकों ने मुख्य रूप से नैतिक विषयों के प्रति विचार किया है। सबसे नैतिक विषय है सभी जीवों के प्रति न्याय एवं सम्मान। सिर्फ मानव ही नहीं सभी सजीव जोंकों के जीवन की रखा। आप जानते हैं कि पश्चिम आज हमें मानवाधिकार सोखा रहा है। लेकिन हमारी सभ्यता सभी जीवों के जीवन की सुरक्षा देतु गंभीर रही है। इसका कारण यह है कि हम यह नहीं मानते की मानव प्रकृति का सबसे सर्वोपरि जीव है। हम मानते है 84 लाख जीव इस पृथ्वी पर रहते हैं यह आंकड़ा आधुनिक आंकड़े के बहुत करीब है। इस श्रृंखला में सभी को जीने का अधिकार है। सिर्फ मानव नहीं बल्कि सभी। ईसाई धर्म के पवित्र ग्रंथ ओल्ड टेस्टामेंट जिसमें भगवान एडम से कहते हैं, मैंने तुममें अपने आप को बनाया है इसीलिए तुम हवा को, जल का, मछलियों का तुम उपभोग करो और अपना प्रभुत्व स्थापित करो। यह हमारे यहाँ नहीं माना जाता। हम किसी जीव से सर्वोपरि नहीं है, छोटी से छोटी चींटी से भी नहीं। यही कारण है कि आप भारत में ध्यान देंगे कि शाम को लोग आटा और चीनी लेकर चीटियों को ढूँढ़ते हैं और चीटियों को भोजन देते है। जब मेरी बेटी ने मुझसे पूछा-वे क्यों ऐसा कर रहे हैं? मैंने कहा-क्योंकि यह बारिश का मौसम है और बारिश होने के कारण चोटियाँ बाहर नहीं जा सकती। इसलिए उन्हें भोजन दिया जाना चाहिए। इसीलिए लोग उन्हें खिला रहे हैं और सूखे जैसी स्थिति में जैसे गुजरात आदि राज्यों में जहां पानी की काफी कमी हो जाती है। वहाँ लोग जानवरों-पक्षियों के प्रति ज्यादा ही ध्यान रखते हैं। इसलिए उन्होंने जानवरों के लिए बड़ा पानी पीने की जगह बना दिया। भारत

भाग्यशाली है क्योंकि यहाँ के महान विचारकों की मुख्य चिन्ता का विषय-लोक संग्रह रहा है। लोक संग्रह अर्थात् लोगों का कल्याण। यह विचार भास्तीय दार्शनिक साहित्य में बार बार आता रहा है उनमें प्रमुख है-भगवतगीता। भगवतगीता में यह पदबंध तीन बार आया है। जो भी कार्य किया जाएगा उसमें लोक संग्रह होना चाहिए। हमारी सभ्यता, संस्कृति में ज्ञान अपने आप में कुछ नहीं है जब तक वह समाज के लिए हितकर नहीं। ज्ञान लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए। हमारे एक कवि, औचित्य विचारक क्षेमेन्द्र ने कहा-सुन्दर कविता में क्या होना चाहिए? यदि वह आपको जीवन औचित्य न सिखाये। आप क्या कर रहे हैं इसका एहसास कराना। आपको क्या करना चाहिए। इसीलिए नैतिक निर्देश मानवीय सभ्यता को प्रभावित करते हैं और हमारे यहाँ इन संदर्भों की लंबी परंपरा रही है।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत संगम साहित्य पहली शताब्दी से मानी जाती है। आज भी भक्ति का भारतीय रूप विभिन्न रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत होता है। भजन कीर्तन यह सभी इसके अभिन्न रूप है। इस परंपरा में अंडाल से लेकर गुरु नानक देव और गुरु गोबिंद सिंह तक की परंपरा सम्मिलित है। मैं अब आपसे दस गुरुओं का परिचय कराना चाहता हूँ। उनमें दोनों गुरु के बारे में अभी मैंने चर्चा की कि कैसे गुरुनानक और गुरुगोबिंद सिंह जी अपने अद्वितीय दृष्टि के कारण विश्व के महान व्यक्तित्व बनी वे सचमुच अद्वितीय थे। गुरुनानकजी के बारे में कहा जाता है कि यह प्रकट हुए। 'धुंधमिटी जग चानन होया, सद्गुरु नानक प्रकटया।' अर्थात् पुंछ मिटी और जगत ने प्रकाश को प्राप्त किया। इस धुंध से 15वीं 16वीं शताब्दी का समान ढका हुआ था। यह धुंध अनेक समस्याओं की थी। यह धुंध बेपरवाही, अविद्या, अज्ञान की थी। अविद्या सबसे बड़ी समस्या है। जब कभी उमारे जीवन में सुख और दुःख आता है तो उसको सहने और ठीक करने की शक्ति हमें हमारे जीवन के अर्जित ज्ञानसे मिलती है। यह ज्ञान हमारे जीवन के अनुभवों से बनता है। इसलिए उस समय धुंध मिटी, जब लोग इन समस्याओं से जूझ रहे थे। वह समस्याएँ लोगों की अचिया रही जिससे वे ग्रस्त थे। आप जानते हैं मैंने पहले कहा था कि हमें अपने मूलभूत सिद्धान्तों को अनुवाद करने से संकोच करना चाहिए और इस स्थिति में और भी ज्यादा जब लक्ष्य भाषा की संस्कृति, विचार और परंपरा एकदम अलग हो। क्योंकि अनुवार विचारों को संप्रेषित करता है। यही कारण है कि विचारों में कुछ और भी जोड़ा जा सकता है। अविद्या भी एक प्रकार की विद्या है। अर्थात् आप कुछ सीखते हैं पर वह आपके लिए उपयोगी नहीं है वह अविद्या है। अविद्या वह जो आपको आनंदित न करे। जब अविद्या का धुंध छाया हुआ था तब गुरु नानक जी ने इस धुंध को सही ज्ञान से दूर किया। उन्होंने ज्ञान के अंवर को समझाया। वह ज्ञान क्या है? गुरु नानक जी ने ज्ञान को बाँचा। उस ज्ञान के माध्यम से जगत के दुःख की धुंध मिटी। आप सोच सकते हैं कि गुरु जी मुगल शासन के अत्याचारों के बारे में लिख रहे थे जब बाबर यहाँ का शासक था। एमनाबाद (आज का पाकिस्तान) के युद्ध में बाबर ने स्थानीय राजा को हरा दिया। इस युद्ध में भीषण रक्तपात हुआ। बाबर ने अपने बहुत से सैनिकों को गवाया। जीत के पश्चात बाबर ने वहाँ के सभी बच्चे, बूढ़े, स्त्रियों को मारने का आदेश दिया। गुरुनानक ने बाबर बाणी में इस बर्चर हिंसा का विक्र किया है।

इसके साथ ही गुरुनानक भी उसी परंपरा से हैं, जिससे महात्मा बुद्ध रहे। इन दोनों महापुरुषों के बीच में दो हजार साल का अंतर है; पर इनके विचार और चिन्ताएँ आपस में मिलती हैं। महात्मा बुद्ध ने

भी लोगों के दुःख पीड़ा के प्रति चिंता जाहिर की और गुरुनानक ने भी। परन्तु महात्मा बुद्ध के समय में भारत सैन्य रूप से बेहद शक्तिशाली था। उस समय कोई विदेशी आक्रान्ता नहीं था जो लोगों को परेशान करता। उस समय जीवन आरामदायक था और लोगों के जीवन में नैतिकता का हास था। लोगों की परेशानी का कारण उनका लोभी होना, शक्तिशाली लोगों द्वारा शोषण रहा। सिर्फ शोषण बाहरी आक्रान्ताओं द्वारा ही नहीं होता बल्कि आंतरिक शासकों द्वारा भी होता है। इसीलिए महात्मा बुद्ध सत्य के प्रश्न की खोज में निकल पड़े और वास्तव में उनका संकल्प अलग था। अपने संकल्प के माध्यम से उन्होंने उचित विकल्पों से मानव समाज के कष्ट को दूर किया। हमारे यहाँ जान की तीन परंपरा हैं-ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग, पक्तिमार्ग आप अपने चुनाव द्वारा किसी भी ज्ञान के आधार पर आचरण कर सकते हैं। भगवतगीता में कर्म के सन्दर्भ में एक अध्याय दिया गया है। कर्म, विकर्म, अकर्म, निषिद्ध कर्म, नियत कर्म, निष्काम कर्म। महात्मा बुद्ध ने कर्म मार्ग चुना। अष्टांग मार्ग, इस मार्ग में छोटे-छोटे कार्य द्वारा इसको किया जा सकता है। महात्मा बुद्ध के अनुसार चार आर्य सत्य हैं जीवन दुःख है। सभी दुःख के कारण हैं। दुःखों का अंत संभव है। दुःखों के अंत का एक मार्ग है- अष्टांग मार्ग। यह बौद्ध जातक कहानियों में यह बड़ी खूबसूरती से चित्रित किया गया। यह कथाएँ मूल रूप से पाली में हैं। यहाँ दो कथाएँ हैं। बारिश का मौसम था। एक व्यक्ति अपने घर के अन्दर बैठा था। बारिश शुरू होने वाली थी। उसने कहा मैंने अपनी दीवार का पुनर्निर्माण करा लिया है, मैंने नई छत बना ली है। मेरे पास पर्याप्त भोजन है जो चार महीने चल सकता है। मैंने कुछ सूखा इंधन भी रख लिया है इसीलिए अब मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ कि तुम जितना चाहे उतना बारिश करो। अगली कहानी एक यात्री की है। वह डाट में बैठा था उसने कहा-ठीक है। दीवारें टूटी हुई हैं, छत टपक रहा है और फर्श भी टूटा हुआ है तथा इसके साथ ही मेरे पास सिर्फ एक दिन का भोजन है लेकिन मैं तो यात्री हूँ कुछ क्षणों के लिए ही कहीं रुकूँगा। इसीलिए जितनी बारिश होनी है हो जाए। अर्थात् पहला दृष्टिकोण है, ये दुनिया एक धर्मशाला है हम यहाँ आकर थोड़ी देर के लिए रुके हैं। इसका दूसरा दृष्टिकोण है की हमें धन संचित करना है। महात्मा बुद्ध के अनुसार लोग अपने दुःख के कारण स्वयं पैदा करते हैं। हमें अपने प्रति समभाव रखना चाहिए।

बही गुरुनानक देव जी के समय में बाहरी आक्रान्ताओं का हस्तक्षेप रहा। बुद्ध के समय में आंतरिक स्तर पर समाज का पतन हो रहा था। अगर आपने नाट्यशास्त्र पढ़ा हो तो उसके आरम्भ में ब्रह्मा भरत से कहते हैं-लोगों का आवरण भ्रष्ट हुआ है। वे दार्शनिक ग्रंथों को नहीं पढ़ते। वे बंद और उपनिषद को नहीं पढ़ते। इसीलिए आप कुछ नाटक बनाएँ जिससे मनोरंजन के माध्यम से सिखाया जा सके। सरस अर्थात् मनोरंजन के माध्यम से शिक्षण। वैसे ही जब महात्मा बुद्ध के समय में समाज में इसी प्रकार की स्थिति बनी तो उन्होंने अष्टांग मार्ग के दर्शन का प्रतिपादन किया। गुरुनानक जी के समय में हिंसा का बातावरण था। लोगों को काटा, मारा और शोषण का शिकार बनाया जा रहा था। लोग असहाय महसूस कर रहे थे क्योंकि आक्रान्ता बाहर से आए थे। लोगों की उनसे लड़ने की कोई संभावना और शक्ति नहीं थी। भारतीय जनता अपनी विश्व की सबसे समृद्ध ज्ञान संस्कृति और परंपरा पर गर्न करती है जो अनेक बार जलाने, नष्ट करने के बाद भी पंडितों द्वारा सुरक्षित किया गया। भारत के पास अभी भी 10 लाख पांडुलिपियाँ मौजूद हैं। 13 वीं शताब्दी में

जब नालंदा की लाइब्रेरी जलाई गयी थी तब यह तीन महीने तक जलती रही। इतनी पांडुलिपियाँ उसमें मौजूद थी। भारत विश्व में पहला ऐसा देश है जिसके यहाँ अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय-वक्षशिला, बल्लभी, विक्रमशीला, नालन्दा रही हैं। उन्हें जलाया गया नष्ट किया गया। इसीलिए वह समय 500-600 वर्ष का पुंथ था जो गुरुनानक के कारण मिय। अगर आप वील दूरंट को पुस्तक-सभ्यता की कहानी पड़े। वह कहते हैं भारत की सभ्यता बेहद संवेदनशील है। क्योंकि यहाँ की सभ्यता में लोग न केवल सीखते हैं बल्कि दूसरी सभ्यता को भी महत्व और स्थान देते हैं। उनकी संस्कृति आत्मकेंद्रित नहीं है इसलिए वह सिर्फ स्वयं के बारे में नहीं सोचते। उनके लिए उनका कोई दुश्मन नहीं है। जैन दर्शन बहुत सारी सभ्यता का मेल है। जैन दर्शन में नदी के प्राकृतिक प्रवाह को बाधित करना, वृक्षों को प्राकृतिक ढंग से विकसित न होने देना भी हिंसा है।

गुरु नानक जी ने दूसरा रास्ता चुना। ज्ञान मार्ग पूर्णतः आत्म विश्लेषण का मार्ग है। ज्ञान के माध्यम से 'स्थितप्रज्ञ' की अवस्था प्राप्त की जा सकती है। आपके लिए सुख और दुःख समान हो जाता है। कुछ प्राप्त करने पर नहीं आप बहुत खुश होंगे और कुछ खोने पर न ही आप दुखी होंगे। यह सिर्फ आप के मस्तिष्क के स्तर पर घटित नहीं होता यह आपके अनुभव में आत्मसात किया जा सकता है। ज्ञान, कर्म और भक्ति इसका मतलब यह नहीं है यह तीनों आइसोलेटेड फैबिन्स है। ज्ञान अर्जन करना अपने आप में कर्म है। कर्म किया (एक्शन) ज्ञान को उत्पन्न करती है। यदि आप उच्च

स्तर की समझ रखते हैं तो आप सब का सम्मान करेंगे। आप दूसरे के विचारों का सम्मान करेंगे। आप हर जीव के प्रति सहानुभूति रखेंगे। यही भक्ति है। आदि शंकराचार्य भागवत गीता के दूसरे अध्याय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं ज्ञान युक्त कर्म ही भक्ति है। यहाँ यह तीनों मार्ग एक दूसरे से अलग नहीं है। बल्कि आपस में सम्बद्ध है।

गुरु गोबिंद सिंह जी बेहद असाधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति है। उन्होंने इन तीनों मार्गों ज्ञान, कर्म एवं भक्ति को एक कर दिया। उन्होंने दार्शनिक काव्य लिखकर एवं अनुवाद किया। रामावतार, चंडी दी चार उन्होंने युद्ध की देवी चंडी के लिए रचना लिखी। उन्होंने ब्रह्म की संकल्पना को 'अकाल स्तुति' नामक रचना के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने भगवत पुराण को पंजाबी में अनूदित किया। 'पाखा दियो बनाएँ' कथा भगवती की। उनकी कथा मैंने लोक भाषा में बना दी। 'मित्र प्यारे नू हाल मुरीदा दा ना कहना' गुरु गोबिंद सिंह जी ने हीर रांझा की प्रेम कथा लिखी है। वह असाधारण योद्धा थे। 40 लोग एक लाख की फौज से लड़ जाते हैं। वह एक महान कवि, दार्शनिक, संत और अद्वितीय योद्धा रहे। ऐसे महान योद्धा पूरे विश्व में दूसरा कोई नहीं। उनका जीवन ध्यान से कर्म, कर्म से होते हुए भक्ति मार्ग तक पहुँचा। मैं इस महत्वपूर्ण तथ्य से आप सभी को अवगत कराना चाहता हूँ कि भारत के चार विश्वास प्रणाली में सिख संप्रदाय चौथा है एवं सबसे युवा है।

दुनिया में दो ही ज्ञान परंपराएँ हैं। उनमें से एक अब्रक्षिक, सेमेटिक, हेब्राइक। अब्राहम एक पादरी रहे, सेमेटिक जाति है, डेबाइक यहूदी लोग। ये तीनों एकेश्वरवादी हैं। दूसरी परंपरा भारत खंड की है जिसका जिक्र विष्णु पुराण में किया गया। भौगोलिक रूप से भारत बेहद स्पष्ट है। हिमालय से हिंद सागर तक, सुलेमान को ड्राई हिल्स से म्यांमार की ग्रीनहिल तक यह जो प्रदेश है भारतखंड है। भारत

देश है नेशन नहीं। नेशन की संकल्पना यूरोप की है। 1881 में जब बिस्मार्क का साम्राज्य टूटा अर्थात् ऑस्ट्रो हंगेरियन साम्राज्य तब यूरोप छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। उनमें एक धर्म, एक भाषा, एक जाति के आधार पर नेशन की परिभाषा तय हुई। हमने अपने स्कूलों में गिलक्रिस्ट एवं गार्नर को ही पढ़ा है। जिन्होंने संविधान लिखा उन्होंने भी यही पढ़ा था। उनको बड़ी चिंता हुई इंडिया वो नेशन नहीं है। यह सोचने की बजाय की परिभाषा गलत हो सकती है उन्होंने सोचा कि देश ही गलत है। अब आप नेशन विल्डिंग, नेशन मेकिंग कहते हैं इससे आप क्या कहना चाहते हैं। मतलब क्या हमें कोई शंका है कि हम एक देश है या नहीं। लेकिन डेरोडोटस जिसने विश्व का इतिहास चौथी सदी में लिखा उसे कोई शंका नहीं थी भारत एक देश है। स्वेनसांग, मेगास्थनीज को कोई भी शंका नहीं रही। मध्य पूर्व के देश हमेशा सिंध नदी के दूसरी तरफ का हिस्सा हिंदुस्तान कहते हैं उन्हें कोई शंका नहीं थी। पर हमें अपने शिक्षा को धन्यवाद देना चाहिए कि हमने इससे शंका करने के अलावा कुछ नहीं सीखा।

मध्य पूर्व की ज्ञान परंपरा एकेश्वरवादी है, जबकि हमारी ज्ञान परंपरा बहुेश्वरवादी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में अद्वैत सिद्धांत से ही जा के एक या दो होने पर चर्चा होती रही है। इस सिद्धांत में समग्रता महत्वपूर्ण है। हमारे यहाँ जी वेदों से निकला ज्ञान है अर्थात् वैदिक ज्ञान, संस्कृति ज्ञान की संस्कृति है। एकेश्वरवाद की संस्कृति नहीं है। आप ध्यान से देखें तो हमारी संस्कृति अर्थात् वैदिक ज्ञान संस्कृति ईश्वर पर आधारित नहीं है। हमारी संस्कृति मानव केन्द्रित संस्कृति है, हमारे यहाँ कोई धर्म ग्रंथ नहीं है। वे धार्मिक ग्रंथ नहीं है। यह सभी ज्ञान के प्रत्यक्ष है। हमारे लिए भौतिक किताब से ज्यादा महत्व ज्ञान का है। आदिशंकराचार्य ने कहा 'या जो जिल्द है. वह ज्ञान नहीं है उसके अंदर जो शब्द राशि है, वह भी नहीं है। वह शब्द किसका संकेत करते हैं, जिस ज्ञान का संकेत करते हैं। वह है वह ग्रंथ।' अंतिम समय में गुरु गोबिंद सिंह ने कहा था 'गुरु मान्छु ग्रन्थ' अब ग्रंथ आपका गुरु होगा। ग्रंथ का मतलब संकेत अर्थात् ग्रंथ में जो ज्ञान है वही आपका गुरु है। वह ज्ञान है, सामाजिक कल्याण के 'लोकसंग्रह' के लिए है। इसके साथ ही ईश्वर केन्द्रित बनाम मानव केन्द्र यही इन दो संस्कृतियों का सबसे बड़ा अंतर है।

मानव के सुख-दुःख जो हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा के केन्द्र में रहे हैं। मैं हमेशा कहता हूँ कि हमारे ग्रंथ ज्ञान रिलीजियस ग्रंथ नहीं है। यह ज्ञान के ग्रंथ हैं। वेद ज्ञान ग्रंथ और वास्तव में बेहतरीन कविता भी। अब भगवत गीता धार्मिक ग्रंथ कैसे है? आप पढ़ कर देखिए उसमें एक बहुत चतुर आदमी एक पंजाबी को मना रहा है कि तुम्हें लड़ना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण जो किंतु परंतु प्रदेश-उत्तर प्रदेश से हैं वही अर्जुन पंजाब से। पंजाब के लोग या तो इधर या तो उधर। इसीलिए अर्जुन ने कहा भी है कि आप कहते हैं कि ज्ञान सर्वोपरि है फिर कहते हैं कर्म सर्वोपरि है तो मुझे एक चीज आप बताइए क्या सर्वोपरि है? तो कृष्ण जो कहते हैं उससे भ्रम पैदा होता है। दोनों में फर्क नहीं है ज्ञान और कर्म में। तब अर्जुन कहते हैं कि मुझे कुछ प्रत्यक्ष दिखाओ। मैं देखें भगवान क्या है? फिर वह विराट रूप दिखाते हैं जब वह एक भ्रम प्रस्तुत करते हैं। बाहुबली फिल्म का नियाग्रा फॉल ती भ्रम है, वह है थोड़े। विराट रूप पी एक भ्रम है। भगवत गीता एक शानदार पाठ है और एक विशुद्ध कविता। अर्जुन ने पूछा कि हम आप को पहचाने कैसे। श्री कृष्ण ने कहा "तुम कहीं भी पूर्णता या सिद्धता

देखो बही मैं हूँ। स्थिर रहने बालों में हिमालय, बहने बालों में गंगा, उदों में गायत्री, ऋतु में वसंत, महीनों में मार्गशीर्ष और छल करने वालों का उल में हूँ।" भगवान पूर्णता या सिद्धता का परम रूप है। आप भी पूर्णता या सिद्धता को प्राप्त कर सकते हैं और आप भी भगवान बन सकते हैं। इसीलिए हमारे महान पाणिनि जिन्हें लोग भगवान पाणिनि कहते हैं। वेदव्यास को भगवान वेदव्यास कहा जाता है। यह सभी मानव हैं पर हम इन्हें भगवान कहते हैं। सिर्फ इसलिए की उनमें पूर्णता है। राम मर्यादा के लिए, कृष्ण अपनी क्रियाओं के लिए भगवान कहलाए। क्या आप जानते है. लिखना गलत शब्द है। क्योंकि हमारी परंपरा मौखिक परंपरा है, लिखित परंपरा नहीं। वह सभी गाने के लिए है। आप संगीत के माध्यम से लम्बे समय तक याद रख सकते हैं। यही कारण है की आपको पुराने गीत लम्बे समय तक याद रहते हैं। क्योंकि आप गा-गाकर लम्बे समय तक रख सकते हैं। इसीलिए ग्रंथों को इन रागों, छंदों में संयोजित किया गया।

गुरु नानक जी ने ज्ञान मार्ग का अनुसरण किया। ब्रह्म की संकल्पना का सवाल हमारी ज्ञान संस्कृति का प्रमुख विषय रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा चार पद्धतिया-सनातन, जैन, बौद्ध और सिख के रूप में प्रस्तुत होती है और उनमें भी सिख सबसे युवा पद्धति है। पर्वडॉर शब्द जहा की अवधारणा में ब्रह्मा को भाषा के सिद्धांत में प्रस्तुत करते है। वह अनादि है अर्थात् जिसकी शुरुआत का हमें पता नहीं है। वह अनंत है क्योंकि हमें उसके अंत का भी पता नहीं। वह अद्वितीय है उसके जैसा दूसरा कोई नहीं। वह सब में व्याप्त है। हमारे विचारक कहते हैं कि जो वैयाकरण ज्ञान की गहराई में गए, उन्हें अंततः मोती मिल गया। बहुलताबाद से शुरु होकर उसमें एकत्व का मोती। यह मोती शब्द ब्रह्मा है। 'विल्ली' शब्द हम बोलते है. मैं अलग ढंग से बोलता हूँ। एक अमेरिकन अलग ढंग से बोलेगा। यह सैकड़ों ढंग से बोला जा सकता है। शब्द क्या है? शब्द वह नहीं है जो लिखा है, छपा है, या जो हमने बोल दिया है या जो हम बोल रहे हैं। इन सबके इतर एक शब्द मस्तिष्क में है। बड़ांड में बड़ा का स्वरूप आंतरिक है, वह बाहरी नहीं है। इसीलिए सृष्टि की रचना पवित्र है; क्योंकि बहा इसमें समाहित है। यदि आप किसी गाँव में जाएंगे तो आप पाएंगे कि एक आदमी भूखा है उसको रोटी नहीं मिली। उसके सामने विडिया फुटक रही हैं, कबूतर खेल रहे हैं। पर वह उन्हें नहीं मारेगा। यही हमारी जीवन संस्कृति है। हमारी संस्कृति में जीवन बहुत पवित्र है, क्योंकि प्रत्येक जीव में बहा है। गुरुनानक देव जी ने इस उपनिषद के ज्ञान को जो कि हमारे देश के लोग मूल चुके थे। आक्रान्ताओं के अत्याचारों के कारण, शोषण के कारण और तमाम समस्याओं के कारण अपने ज्ञान से विमुख हो चुके थे वह अपने आप को हीन मानने लगे थे; ऐसे में गुरु नानक देव जी ने घूम-घूम कर देश में ज्ञान को पुनः जागृत किया और लोगों में ज्ञान की चेतना भर दी। उनकी यात्राओं को उदासियों कहते हैं। कई उदासियों में बहा गए। उनको इस बात की चिंता या उदासी थी कि लोग इतने उदास या परेशान क्यों है। उन लोगों की समस्याओं को दूर करना उनकी उदासियों का लक्ष्य था। वास्तव में कथा प्रवचन परंपरा अर्थात् 'परिवार्जक की परंपरा' हमारे यहाँ बेहद प्राचीन है। साधु संत गाँव-गाँव जाकर लोगों में जागरण का प्रसार करते रहे।



जिसकी तुलना हम पड़े से करते हैं। घड़ा बनाना, सुराही बनाना, जो भी चनाना है फॉर्म देना है। वह रूप देते हैं। 'पुरख' पुरुष-आत्मा और चित्र इसका मतलब ऊर्जा सिद्धांत है। एक ओंकार ऊर्जा का सिद्धांत है। यदि पुरख, भौतिक रूप से पुरुष है; तो करतापुरुष बही एक है, जो करता है, बही कर्चा है, वह ऊर्जा जो करने की है।

'निर्भय' कोई भय नहीं। भय मानवीय गुण है। 'निर्वैर' कोई घृणा नहीं, कोई दुश्मन नहीं, कोई विपक्षी नहीं, कुछ नहीं। बड़ा मानवीष समृद्धता का शब्द है। गुरुजी ग्रंथ साहिब में स्वयं 943 पदों के माध्यम से सकारात्मक वर्णन करते हैं और जब अंत नहीं आता। इसीलिए बह नेति-नेति कहते हैं। मैं क्या हूँ, मैं कुछ शब्दों में बयाँ कर सकता हूँ। लेकिन मैं क्या नहीं हूँ यह तो अनंत है। मैं तुम नहीं है, मैं यहाँ से नहीं हूँ, मैं कहाँ से नहीं हूँ, नहीं का संसार अनंत है। इसीलिए नीति को जैन कहते हैं स्व पर्याय, परपर्याया स्व पर्याय का जगत बहुत बड़ा होता है इसलिए बड़ा की परिभाषा ज्यादा परपर्याय में होती है जो मानवीय सिद्धांत के सोच के परे है। इसीलिए वह निर्वैर है. निर्भय है।

'अकाल मूरत' अकाल, काल समय है। हमारे देश में कालगणना बहुत आरंभ से उन्जैन में होती थी। उज्जैन में मंगलनाथ का मंदिर है जिसके नीचे से कर्क रेखा निकलती है। इंग्लैंड में ग्रीनविच से समय की गणना होती है हमारे यहाँ उन्बैन मंगलनाथ से होती है। तो अगर आप भागवत पुराण पढ़ेंगे तो इतनी सूक्ष्म समय की गणना से युगों तक की गणना क्रमशः दी जाती है। काल लम्बा समय एवं स्थान है। लेकिन समय नया है? मैं 10 साल के बाद अपने दोस्त के घर गया और मैंने उसके बच्चे को देखा और कहा अरे यह इतना बड़ा हो गया। समय बीतने का पता कैसे चलता है? जब कोई ऑब्जेक्ट बदल जाता है। यह जरा ध्यान से समझने की बात है। समय है क्या। घड़ी की सुई इधर से हटकर उधर चली गई। यही हुआ ना। समय बीत गया जिसको आपने 3 फुट का देखा था वह आज 6 फुट का हो गया है। समय का बीवना दिखाई नहीं देता। उसी में होता है। अतः एक बड़ा अनेक कैसे हो जाता है। आप में भी है, मुझ में भी है. पेड़ पक्षी सभी में। पर हमने तो कहा जहा एक है। फिर एक अनेक कैसे हो गया। एक अनेक हो गया। यह अनेक काल शक्ति के कारण हो गया। काल की शक्ति से बढ़ा एक से अनेक हो गया। इसीलिए जो ब्रा अक्षर है, बदलता नहीं। अनेक नहीं होता, वह अकाल है। परब्रह्म-हम लोगों के दर्शन में आता रहा। उसमें यह जो समझ है कि परब्रह्म समय से परे है। गुरु जी ने अकाल शब्द का प्रयोग किया और गुरु गोबिंद सिंह जी ने पूरी लंबी अकाल स्तुति लिखी। अकाल क्या है? अकाल मूरत, मूर्त और अमूर्त मूर्त रूप है। एक ओंकार यह समय से परे है। अकाल विशेषण है। वह फॉर्म है जिसे जह्य धारण करता है। आप समझ रहे हो, यो अर्थ निकले फिर बदल गया। एक ओंकार अकाल मूरत अजूनी, अजूनी जन्म का विषय नहीं? क्या वह जन्म का विषय नहीं है। अगर आप पैदा नहीं होते, आप मर भी नहीं सकते।

हमारी जी कथा प्रवचन परंपरा है। गुरु नानक ने पूरे उपनिषदों का ज्ञान, लोक भाषा में डाल दिया या गुरु गोबिंद सिंह ने शास्त्रों का ज्ञान लोक भाषा में डाल दिया। ज्ञानेश्वर जी ने गीता का ज्ञान मराठी में डाल दिया या रामानुजाचार्य ने बड़ा सूत्रों का ज्ञान अपनी तमिल टीका में डाल दिया। इस तरह इस देश में पूरे भक्तिकाल में मति कवियों ने ज्ञान का स्थानांतरण कर दिया। लोक भाषा और क्योंकि नही

लान सभी भारतीय भाषाओं में था इसीलिए विविध भाषाओं के अनेक होने के बावजूद भी हम एक हैं। आप भारत के किसी कोने में जाएँ आप महसूस करेंगे कि आप इसी देश में हैं। अब आप भाषा नहीं समझ पाएंगे। पर आप महसूस करेंगे कि आप इसी देश के हैं। के.पी.एस. गिल ने जेएनयू में आकर कहा था आप बौद्धिक लोग हैं। आप चर्चा करते हैं कि भारत एक देश है या नहीं? लेकिन मुझे बताना है कि मैं इस देश के 31 जगहों पर कार्य कर चुका हूँ, जहाँ भी मैं गया मुझे हमेशा एहसास हुआ कि मैं इसी देश में हूँ। फिर प्रश्न उठता है कि लोगों को क्या जोड़ता है? लोगों को

जोड़ती है चेतना। यह चेतना विकसित हुई है, सर्व सामान्य ज्ञान विरासत से। सर्वमान्य ज्ञान विरासत का अद्वितीय स्वरूप है वेदांता सभी इसे मानते हैं, यह आपकी सोच में शामिल है। चेतना का एकत्व है। आपकी चेतना को प्रभावित करती है। यह तभी आप समझ सकते हैं जब गुरु आप के प्रति दयालु हो, गुरु का प्रसादा सिर्फ गुरु

'बिन गुरु ज्ञान कहाँ से पार्क'

गुरु गोविंद दांक खड़े काको लागू पाय।।

बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए।

यह बात आपको तब समझ आएगी, यदि आपको गुरु का प्रसाद मिलेगा। यदि आपके गुरु हैं जो आपको इसको व्याख्या कर सकें। तो यह इसका मूल मंत्र है और गुरु नानक जी की महानता यह थी कि यह मूल मंत्र वेदांत का बहा का सिद्धांत है और या निराकार और निर्गुण है। वह घूमते हुए दक्षिण गए। 'दक्खिनी ऑंकार' भी लिखी। 'रक्खिनी ऑंकार' में सगुण ब्रह्म है। ब्रा क्या क्या रूप लेता है। देवी देवताओं के, विष्णु, रुद्र आदि का वर्णन है। यही विशेषता है जो गुरु नानक को विशिष्ट बनाती है। यही कारण है की उन्हें भक्ति आन्दोलन का "सनों से सुसोभित मुकुट" (क्राउन ज्वेल) कहा जाता है क्योंकि नही एक विचारक है, जिन्होंने इस देश को हिंदुस्तान का है। 'सुखमान खसमाना किता, हिन्दुस्तान उखया।' वह पहले व्यक्ति है जिन्होंने पूरे देश के अर्थ में हिंदुस्तान शब्द का प्रयोग किया। अतः भारतीय चेतना और उनकी विकास यात्रा पूरे देश में इसके माध्यम से हुई। उन्होंने इसके साथ ही बौद्धिक लोगों से तर्क वितर्क किया एवं उस समय में इस वाद विवाद और विचार को रखा। उस समय नाथ योगियों की परंपरा थी। उन्होंने 'सिद्ध गोष्ठी' नाम की रचना की। उन्होंने उत्पत्ति के प्रश्नों के संदर्भ में विचारकों के चिंतनों को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया। 'आसा दी वार' में वह कहते हैं 'अरबर अरबद धुंध कारा' हजारों सैकड़ों वर्ष पहले अंधेरा ही अंधेरा था धुंध थी। उसमें कुछ नहीं था। नासदीय सूक्त है ऋग्वेद का। पूरे नासदीय सूक्त को उन्होंने अपनी भाषा में ढाला है। उस 'धुंधकार' से आगे 'मिटी धुंध जग चानन होया, सतगुरु नानक प्रगटया' और तब लोगों ने यह पुनः समझना शुरू किया। जब सिख प्रणाली ज्ञान मार्ग से कर्म मार्ग की ओर प्रवृत्त हुई। अपने धर्म को संरचित करने के दो ही तरीके हैं। धर्म मतलब रिलीजन नहीं है। आप की संस्कृति आपकी सभ्यता हेतु यहाँ दो मार्ग पहला शास्त्र दूसरा शस्त्र। गुरु नानक ने उस समय ध्यान से शुरुआत की। पाँचवे गुरु ने या महसूस किया कि शास्त्र से बात नहीं चनेगी शस्त्र भी रखना पड़ेगा। उनको शहादत के बाद उनके पुत्र गुरु हरगोबिन्द जी ने दो तलवारें पहनना आरंभ किया मोरी और पीरी। मीरी ज्ञान और

पीरी तलवार। इसका संयुक्त रूप गुरु गोबिंद सिंह में दिखाई देता है। नह महान योद्धा, संत, विचारक रहे।

मैं आपको भी कह रहा था कि हम बड़ी चीज को छोटी बनाने में बड़ी शलाघा रखते हैं। पर आज हम बोजाई संस्कृति में रहते हैं। इतने बड़े पीपल को छोटा सा बनाकर दिखाते हैं। इसे कला का कार्य कहा जाता है। एक समय में सामान्य लोगों को असाधारण बनाया जाता था, पर आज के समय में हर महानता को छोटे रूप में प्रस्तुत

किया जाता है। इसके विपरीत गुरु गोबिंद सिंह जो कहते हैं 'विड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ तब मैं गुरु गोबिंद सिंह जी नाम कहाँ।' 'सया लाख से एक लड़ाऊँ तब मैं गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाँको सारागढ़ी को लड़ाई में (1889) अट्ठारह सिख सिपाही चौसठ हजार पठानों से लड़े। यह जो जुनून उन्होंने पैदा की। खालसा बनाया। अकाल से खालसा तक: मतलब निर्गुण से सगुन तक कि जो यात्रा हुई, शस्त्र से शास्त्र तक की जो यात्रा हुई और उन्होंने आनंदपुर साहब में 5 लोगों को चुना-पंज प्यारे और फिर उन्होंने उनका रक्त सब को दिखाया, वास्तव में वह बकरे का खून था। लेकिन उन्होंने कहा था मुझे आपका सिर चाहिए-कौन तैयार है अपना सर देने के लिए। एक व्यक्ति खड़ा हुआ और ऐसे ही 5 लोग पंज प्यारे कहलाए। यह सभी पंज प्यारे भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में थे। पहले उड़ीसा के जगन्नाथ पुरी से, दूसरे बरार आंध्र प्रदेश से, तीसरे गुजरात से, चौथे मेरठ से यह जाट थे और पाँचवे पंजाब से। गुरु गोबिंद सिंह जी में उनको आशा दिखाई। उन्होंने लोगों को अपने साथ जोड़ा। यही कारण है कि महाराजा रणजीत सिंह जय मरे तो उनको इच्छा थी कि कोहिनूर को जगन्नाथ मंदिर भेजा जाए। महाराजा रणजीत सिंह कभी सतलुज से आगे नहीं गए। उन्होंने ऐसी इच्छा क्यों रखी? ऐसा क्यों चाहते थे कोहिनूर को जगन्नाथ मंदिर में भेजना। क्योंकि पहला व्यक्ति जिसने अपने स्वयं को समर्पित किया था, गुरु गोविंद सिंह जी को-यह जगन्नाथपुरी से था।

अतः 'अकाल से खालसा' तक का पूरा आंदोलन सिर्फ सिखों में ही दिखाई देता है। यह न जैनों में दिखाई देता है न बौद्धों में। इस में सनातन शस्त्र और शास्त्र का मेल है। आज दक्षिण के किसी कोने में कोई उत्तर में जाता है तो स्वर्ण मंदिर जरूर जाता है। बुद्ध के सिद्धांत अहिंसा, जीव के विरुद्ध हिंसा न करना मानवीय मूल्य हैं। मेरे दादाजी जय शाम को हम फूल फूल तोड़ते थे, तो बोलते थे कि उसका भी सोने का समय है, इस समय उसे क्यों तोड़ रहे हो इसीलिए भारत में हर तरह के जीवों के लिए एक चेतना प्रणाली विकसित है। हम देखते हैं कि सिख सम्प्रदाय में विचारों का जो मंचन हुआ है जो गुरु ग्रंथ साहब से लेकर श्री दसम ग्रंथ तक विकसित हुआ है। वास्तव में यह विचारों का इतिहास है। ऋग्वेद से गुरु ग्रंथ साहय तक एक विशाल लंबी यात्रा है। यह कहते हुए मैं अपना व्याख्यान पूर्ण करना चाहूँगा कि ऋग्वेद जिस तरह छंदों में विकसित हुआ है वैसे ही गुरु ग्रंथ साहय रागों में। ऋग्वेद में 10 मंडल हैं गुरु ग्रंथ साहय में 10 गुरु हैं। भारतीय विचारों के इतिहास में ऋग्वेद से गुरु ग्रंथ साहय की यात्रा बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।

(हिंदी अनुवाद आदित्य नाथ तिवारी)